75 शेड्स ऑफ हैरिटेज में दिखा भारत का 2000 साल पुराना मंदिर बनाने का फॉर्मूला

पहली बार शहर के लोगों ने लेगो ब्लॉक की तरह थर्माकोल ब्रिक्स से खुद तैयार किया अपना मंदिर

एसपीए में नेशनल कॉन्फ्रेंस, 19 राज्यों के 100 डेलीगेट्स आए

सिटी रिपोर्टर। देश में बने प्राचीन मंदिरों की खूबसूरती को आपने भी टूरिस्ट के तौर पर देखा होगा। बड़ी-बड़ी शिलाएं और पिलर्स कैसे इन मंदिरों में सिर्फ बैलेंसिंग और सेंटर ऑफ ग्रेविटी के साइंटिफिक रूल के आधार पर सदियों से खड़े हैं, इससे जुड़ी रोमांचक कहानियां शुक्रवार को स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) में शहर के लोगों को जानने को मिलीं। मौका था, यहां आयोजित तीन दिनी नेशनल कॉन्फ्रेंस का। 75 शेड्स ऑफ हैरिटेज विषय पर आयोजित हुई इस नेशनल कॉन्फ्रेंस में 19 राज्यों के 100 से ज्यादा डेलीगेट्स शामिल हुए।

450 थर्माकोल के टुकड़ों से बना 7 फीट का उदयेश्वर मंदिर

एग्जीबिशन में बिल्ड योर टैम्पल थीम पर डिस्प्ले किए गए टैम्पल मॉड्यूल लोगों को इंट्रेस्टिंग तरीके से मंदिर निर्माण को समझाने वाले रहे। इसमें सबसे खास विदिशा में बना उदयेश्वर मंदिर का मॉड्यूल रहा। 7 फीट के इस मॉड्यूल को 450 थर्माकोल के टुकड़ों से तैयार किया था, जो बताता है कि मंदिर किस तरह से ब्रिक बैलेंस के प्रिंसिपल पर टिका है। इस मंदिर को विजिटर्स लेगो ब्लॉक की तरह खुद निकालकर जोड़ सकते थे।

भोजपुर मंदिर की ड्रॉइंग्स

एग्जीबिशन में भोजपुर मंदिर को भी दिखाया। करीब 1000 साल पुराना यह मंदिर राजा भोज ने बनवाया था, जो अभी अधूरा है। एसपीए की इस एग्जीबिशन में भोजपुर मंदिर के पास बनी लाइन ड्रॉइंग्स को डीकोड कर यह बताया गया कि यह मंदिर अगर पूरा बनता तो कितना बड़ा बनता और इसका आकार क्या रहता।

वॉल पैनल में दिखाई मंदिरों और गवाक्षों की कहानी

डॉ. विशाखा कवथेकर के मार्गदर्शन में टैम्पल आर्किटेक्चर पर एक खूबसूरत एग्जीबिशन भी आयोजित की गई। इसमें भारत में मंदिर निर्माण की शैली किस तरह 2000 साल में परिपक्व हुई, इसके उदाहरण देखने को मिले। एग्जीबिशन में होलोग्राफिक टैम्पल, भूमिज मंदिरों, द्रविण शैली के मंदिरों और गवाक्षों की खूबसूरत कहानी वॉल पैनल और 3डी मॉडल्स के साथ डिस्प्ले की गई। पहले दिन कल्चरल लैंडस्पेक और सैकर्ड आर्किटेक्चर पर एक्सपर्ट पैनल से डिस्कशन किया। इस कॉन्फ्रेंस का आयोजन आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, एमपी टूरिज्म बोर्ड, विजना भारती, आईकोमॉस इंडिया और एमपी काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के साथ मिलकर किया गया है। कार्यक्रम का मीडिया पार्टनर दैनिक भास्कर है।